बुद्धवर्ष 2552, आषाढ़ पूर्णिमा, 18 जुलाई, 2008 वर्ष 38 अंक 1

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

For Patrika in various languages, visit: www.vri.dhamma.org/newsletters

धम्मवाणी

दुक्खं दुक्खसमुप्पादं, दुक्खस्स च अतिक्कमं।
अरियं चट्ठङ्गिकं मग्गं, दुक्खूपसमगामिनं॥
एतं खो सरणं खेमं, एतं सरणमुत्तमं।
एतं सरणमागम्म, सब्बदुक्खा पमुच्चति॥

धम्मपद १९२-१९३, बुद्धवग्गो

जो बुद्ध, धर्म और संघ की शरण गया है, जो चार आर्य सत्यों - दुःख, दुःख की उत्पत्ति, दुःख से मुक्ति और मुक्तिगामी आर्य अष्टांगिक मार्ग - को सम्यक प्रज्ञा से देखता है, यही मंगलदायक शरण है, यही उत्तम शरण है। इसी शरण को प्राप्त कर (व्यक्ति) सभी दुःखों से मुक्त होता है।

[बुद्धजीवन-चित्रावली]

(अभी तक विपश्यना पत्रिका में "बुद्धचारिका" नाम से धारावाहिक लेख प्रकाशित हो रहे थे। इन लेखों और चित्रों की संख्या लगभग १५० है। ये चित्र 'ग्लोबल विपश्यना पगोडा' की आर्ट-गैलरी में सुशोभित होंगे। इन पर अनवरत काम चल रहा है परंतु अभी तक सभी चित्र बन नहीं पाये हैं। इसलिए निर्णय लिया गया कि जो चित्र बन कर धम्मगिरि की आर्ट-गैलरी में लग गये हैं, उनकी एक अलग पुस्तक प्रकाशित कर दी जाय, ताकि जो लोग धम्मगिरि देखने के लिए आते हैं उन्हें इन चित्रों की, यानी बुद्ध के जीवन संबंधी घटनाओं की सही जानकारी मिल सके। इस प्रकार २७ आलेखों (घटनाओं) के माध्यम से ३१ चित्रों की एक पुस्तक **'बुद्धजीवन-चित्रावली'** *नाम से प्रकाशित कर दी गयी है। इसमें बायें पृष्ठ पर चित्र हैं और सामने दाहिने पृष्ठ पर आलेख हैं। इससे भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधित उन घटनाओं को समझना आसान हो जाता है और उनके बारे में फैली गलतफहमी भी दूर होती है। चूंकि इस पुस्तक का नाम "बुद्धजीवन-चित्रावली" रखा गया है इसलिए इसके शेष लेख फिलहाल इसी नाम से प्रकाशित होंगे। जिन्होंने यह पुस्तक नहीं पढ़ी है, उन्हें इन आलेखों से प्रेरणा मिलेगी और वे आधुनिक तकनीक से छपी इस अत्यंत सुंदर और प्रेरणास्पद पुस्तक 'बुद्धजीवन-चित्रावली' को देखने-पढ़ने की ओर उन्मुख होंगे। इसे केवल देख-पढ़ कर ही संतुष्ट न हो जायँ बल्कि विपश्यना का अभ्यास करके सद्धर्म से सही माने में लाभान्वित हों! सं.)*

राहुल की प्रव्रज्या

ममतामयी माता यशोधरा ने उसके पिता का परिचय देकर और पहचान बता कर पुत्र राहुल को कहा – "जा, अपने पिता से मिल और उनसे अपनी विरासत मांग। उनके पास स्वर्णरत्न से भरे चार घड़े हैं।"

स्वर्णरत्नभरे कौन से चार घड़े थे? ये जो चार आर्यसत्य हैं, जो कि स्वर्णरत्न से भी अधिक मूल्यवान हैं, जो कि वस्तुतः अनमोल हैं।

तभी कहा गया –

यं किञ्चि वित्तं इध वा हुरं वा,
सग्गेसु वा यं रतनं पणीतं।
न नो समं अत्थि तथागतेन,
इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं॥

– (खुद्दकपाठ- ६, रतन-सुत्त- ३)

– जो भी धन-संपत्ति यहां इस लोक में है, अथवा वहां अन्य लोकों में है और स्वर्ग में भी जो उत्तम रत्न-संपत्ति है, उनमें से कोई भी उसकी तुलना नहीं कर सकती, जो तथागत में है। बुद्ध में जो रत्न है वह अतुल है, अनमोल है।

बुद्ध में ये चार आर्यसत्यों के अनमोल रत्न हैं जो कि उन्होंने स्वयं अर्जित किये हैं, जिसे वे लोगों को बांट रहे हैं। इन पर तेरा अधिकार है। तू इनका वारिस है। यह तेरी विरासत है। जा, मांग उनसे।

यशोधरा मन-ही-मन सोचती है, "मैं भी इस अनमोल रत्न की विरासत प्राप्त करूंगी। परंतु कई कारणों से बुद्ध ने अभी भिक्षुणीसंघ की स्थापना नहीं की है। जब भी करेंगे तब मैं भी प्रव्रजित होकर इसके चरणचिह्नों का अनुगमन करके निकल पड़ूंगी और अपना उद्धार कर इनके लोकहिताय अभियान में लग जाऊंगी। मेरा लाडला यहां राजमहल के वैभव-विलास में पल कर क्या प्राप्त करेगा? अपने पिता की कल्याणी छत्रछाया में पलेगा तो सद्धर्म का अनमोल रत्न प्राप्त कर लेगा। जीवन सफल कर लेगा। यह सोचते-सोचते, उसने अपने लाडले को विदा करते हुए कहा, "जा, बेटा! अपने पिता से विरासत मांग!"

राहुल प्रसन्नचित्त से भगवान के पास पहुँचा। पहुँचते ही उसे इतनी सुखद शांति और शीतलता का अनुभव हुआ कि बरबस ही उसके मुँह से निकल पड़ा –

"सुखा ते, समण, छाया'ति।"

– "श्रमण, तेरी छाया सुखद है।"

भगवान की छत्रछाया किसको सुखद नहीं लगती? उनके सान्निध्य में सारे पाप-ताप दूर हो जाते हैं। पुत्र ने पिता की ऐसी सुखद शांतिप्रद छत्रछाया प्राप्त की। पिता ने पुत्र को धर्मरत्न की अनमोल विरासत दी। उसे सारिपुत्र के हवाले कर वहीं प्रव्रज्या दिलवायी।

धर्ममय वातावरण में पलता हुआ राहुल बड़ा हुआ और विपश्यना साधना सीख कर, अभ्यास करते-करते अरहंत अवस्था प्राप्त कर ली। धन्य हुआ राहुल! धन्य हुई राहुल को मिली विरासत!

अनाथपिंडिक

श्रावस्ती से राजगीर अपनी ससुराल आये हुए अनाथपिंडिक ने जब सुना कि संसार में बुद्ध उत्पन्न हुए हैं और कल उसके साले के घर भोजन के लिए पधार रहे हैं तब वह भगवान के दर्शन के लिए अधीर हो उठा। सुबह पौ फटने के पहले ही चल पड़ा और नगर के बाहर जिस शीतवन में भगवान ठहरे हुए थे, वहां पहुँच गया।

भगवान ने उसे नाम लेकर बुलाया – "आओ, सुदत्त!"

भगवान मेरा नाम लेकर मुझे बुला रहे हैं। इसी से वह हर्ष-विभोर हो उठा। भगवान ने अनाथपिंडिक को धर्मकथा कही, जिसे सुनकर उसका मन शांत, प्रसन्न और निर्मल हुआ।

अपनी पूर्व पुण्यपारमी के कारण भगवान की वाणी सुनते-सुनते उसके भीतर अनित्यबोध जागा और वह पृथग्जन से स्रोतापन्न हुआ। भाव-विभोर होकर उसने भगवान को दूसरे दिन भोजन के लिए आमंत्रित किया। भगवान ने मौन रह कर स्वीकार किया।

दूसरे दिन भोजन ग्रहण कर भगवान ने धर्मोपदेश दिया, तब अनाथपिंडिक ने भगवान से करबद्ध प्रार्थना की – 'भंते भगवान, भिक्षु-संघ के साथ अगला वर्षावास श्रावस्ती में स्वीकार करें।'

भगवान ने स्वीकारते हुए कहा – "हे गृहपति, तथागत शून्यागार, यानी एकांत, में रहना पसंद करते हैं।"

अनाथपिंडिक प्रफुल्लित हो कह उठा – "जान गया भगवान, समझ गया सुगत!"

और श्रावस्ती पहुँच कर भगवान के विहार के लिए उपयुक्त स्थान की खोज करने में लग गया। स्थान ऐसा हो जो कि – नगर से न अति दूर हो, न अति समीप। जहां लोगों के आ सकने की सुगमता हो। जहां न दिन में बहुत भीड़-भाड़ हो, न रात में बहुत हल्ला-गुल्ला। जो ध्यान के अनुकूल हो।

खोजते-खोजते उसे जेत राजकुमार का उद्यान अनुकूल दीख पड़ा। इसे खरीदने के लिए वह जेत राजकुमार के पास गया। राजकुमार अपना उद्यान नहीं बेचना चाहता था। टालने के लिए उसकी कीमत **कोटि-सन्थर** बता दी।

अनाथपिंडिक ने उसकी जबान पकड़ ली और तत्क्षण सौदा पक्का कर लिया। **कोटि-सन्थर** का अर्थ था – करोड़ों का बिछावन। यानी सारी भूमि पर एक किनारे से दूसरे किनारे तक सोने के सिक्कों की बिछायत करनी। अनाथपिंडिक ने यही किया। गाड़ियों में सोना भर-भर कर लाया और उसे उद्यान की सारी भूमि पर बिछाना शुरू कर दिया।

जहां भगवान लोगों को धर्म सिखायेंगे, उस तपोभूमि की कोई कीमत नहीं आंकी जा सकती। वह अत्यंत प्रसन्न चित्त से जेतवन को सोने की मोहरों से ढके जा रहा था।

राजकुमार यह सब देख कर भौचक्का रह गया। जमीन का एक कोना अभी सोना बिछाये जाने से बचा था, अनाथपिंडिक ने गाड़ियों से और सोना लाने का आदेश दिया, परंतु जेत राजकुमार ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा – बस कर, गृहपति, इस खाली जमीन पर स्वर्ण मत बिछा। यह मुझे दे, यह मेरा दान हो। अनाथपिंडिक ने स्वीकार किया।

(चूळव० ३०४-३०७, अनाथपिण्डिकवत्थु)

अनाथपिंडिक ने उस बहुमूल्य धरती पर विहार, कोठे, सभागृह बनवाये; पानी गर्म करने के लिए अग्निशालाएं बनवायीं, भंडारघर, शौचालय (प्रसाधनगृह), खुले चंक्रमण, चंक्रमण शालाएं, पानीघर, प्याऊ , स्नानागार बनवाये; पुष्करणियां और मंडप बनवाये, जिससे कि हजारों भिक्षु और साधक भगवान के सान्निध्य में सुविधापूर्वक रह कर ध्यान कर सकें। भगवान के इस परम श्रद्धालु, गृहस्थ शिष्य ने दान के इतिहास में एक अतुलनीय समुज्ज्वल कीर्तिमान स्थापित किया। भगवान ने उसे दान के क्षेत्र में अग्र की उपाधि दी।

मंगल मृत्यु

✪ भिलाई की वरिष्ठ सहायक आचार्या श्रीमती कांता सुरेश कठाने का १३ अप्रेल, २००८ को हृदयाघात से शरीर शांत हो गया। उन्होंने लगातार अपनी सेवाओं से न केवल 'धम्मकेतु', दुर्ग विपश्यना केंद्र के निर्माण और उसके विकास में सहयोग दिया, बल्कि अनेक साधक-साधिकाओं को धर्मपथ पर आरूढ़ करके उन्हें आगे बढ़ने में बहुत बड़ा योगदान दिया। इस महान पुण्य से उन्हें शांतिलाभ प्राप्त हो।

✪ भरतपुर (राजस्थान) से श्री दिनेशचंद्र गुप्ता लिखते हैं, "भरतपुर के श्री श्रीनिवास शर्मा ने बहुत शांतिपूर्वक शरीर त्यागा। लगभग २५ वर्ष पूर्व राजस्थान शिक्षा विभाग ने अपने अध्यापकों को सवैतनिक अवकाश देकर विपश्यना शिविरों में भाग लेने के लिए भेजा। अनेक शिक्षकों ने शिविर में भाग लिया, परंतु श्रीनिवासजी ने पूर्ण समर्पण और निष्ठा के साथ भाग लिया और पहले ही शिविर में अनुभव किया कि इससे ऊंची अन्य कोई आध्यात्मिक साधना नहीं है। उसके पश्चात उन्होंने अनेक शिविरों में भाग लिया और सेवानिवृत्ति के बाद अनेक दीर्घ शिविर भी किये।

अंतिम समय बीमारी की अवस्था में बहुत ही शांतिपूर्वक कहते थे कि हमको तो बस देखते जाना है। गुरुजी के प्रवचनों और दोहों की कैसेट सुनते रहते थे तथा शरीर पर होने वाली संवेदनाओं को देखते रहते थे। उन्होंने थोथे कर्मकांडों से मुक्त रह कर आदर्श जीवन जिया, जो हमारे लिए प्रेरणा का विषय बन गया है।"

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

आचार्य

१. श्रीमती सज्जनदेवी धारीवाल, अजमेर
धम्मपुष्कर, पुष्कर की सेवा

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री रेवचंद शाह, अहमदाबाद
धम्ममरुधरा, जोधपुर की सेवा
२. श्री उमाशंकर ठुबरीकर, नागपुर
धम्मनाग, केंद्र के आचार्य की सहायता

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

१. श्री सुरेशचंद्र कठाने, भिलाई
धम्मकेतु, दुर्ग की सेवा
२. श्री सुरेश खन्ना, जयपुर
धर्मप्रसार की सेवा
३. श्री तख्तमल कोठारी, जयपुर
धर्मप्रसार की सेवा
४. श्री दिनेश मेश्राम, बालाघाट
धम्मकानन, बालाघाट की सेवा
५-६. श्री रामेश्वरलाल एवं श्रीमती आनंदीदेवी शर्मा, जयपुर
राज. के अकेंद्रीय शिविरों की सेवा
७. श्री बाबूराम यादव, जयपुर
राजस्थान के जेल-शिविरों की सेवा

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्रीमती उर्मिलादेवी ऐरन, अजमेर
धम्मपुष्कर, पुष्कर केंद्र के आचार्य की सहायता
२. श्रीमती चंद्रकला इलमकर, नागपुर
धम्मनाग, नागपुर केंद्र के आचार्य की सहायता
३-४. श्री रामकृष्ण एवं श्रीमती सरोज बांते, नागपुर
धम्मवसुधा, हिवरा केंद्र के आचार्य की सहायता
५-६. श्री चंद्रशेखर एवं श्रीमती सुनीता जैन, कोटा
७. श्री हरिप्रसाद गुप्ता, कोटा
८. श्रीमती सुभद्रा खन्ना, जयपुर
९. श्रीमती गीता माहेश्वरी, अहमदाबाद
१०. श्री रमेश पंडित, भोपाल
११. श्रीमती रंजना स्वामी, नागपुर
१२. श्री भंवरसिंह सहवाल, अजमेर
१३-१४. श्री गौरीशंकर एवं श्रीमती हेमलता शर्मा, लखनऊ
१५. श्री सीताराम शर्मा, जयपुर
16. & 17. U Htin Aung &Daw Khin Myint May, *Myanmar*
18. Prof. Dr. (Mrs.) Saskia Ishikawa-Franke, *Japan*
19. & 20. Mr. Patrick & Mrs. Sachiko Klein, *Japan*

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री विनय दहाट, नागपुर
२. श्री आर. कन्नन, चेन्नई
3. Dr. (Mrs.) Nyunt Nyunt Sein, *Myanmar*
4. Mr. Charlie Dowley, *Australia*
5. Ms. Anna Adams, *Australia*
6. & 7. Mr. Justin Goold & Mrs. Ruth Smith, *Australia*
8. Mr. Graham Wilson, *Canada*
9. Mr. Olivier Perez, *Switzerland*
10. Ms. Mirjam Pelle, *the Netherlands*
11. & 12. Mr. Teun Zuiderent-Jerak- & Mrs. Sonja Jerak-Zuiderent, *the Netherlands*

बालशिविर-शिक्षक

१. सुश्री शालिनी सुंदरमूर्ति, बैंगलोर
२. श्री सुनील कुमार के.सी., कासरगोड, केरल
३. श्री उत्तमराव कांबले, बीड
४-५. श्री महेश एवं श्रीमती वंदना वालवेकर, सांगली
६. श्रीमती सुचित्रा कांबले, रत्नागिरि
7. Mr. Gabriel Gudding, *USA*
8. Mr. Vivek Jain, *USA*

हिवरा का निर्माणाधीन विपश्यना केंद्र

वर्धा जिले के हिवरा नामक गांव में २ एकड़ जमीन पर, लगभग ४० साधकों के लिए योग्य निवास और धम्मकक्ष का निर्माण हो चुका है। पूज्य गुरुदेव ने इसे **"धम्म वसुधा"** नाम से संबोधित किया है। इसका निर्माण "विपश्यना प्रचार-प्रसार समिति", हिवरा, पो. झडसी, ता. सेलु, जि. वर्धा कर रही है। समिति को आयकर ८०-जी की सुविधा प्राप्त है। अधिक जानकारी और धर्मलाभ प्राप्ति के लिए **संपर्कः** श्री रामकृष्ण बांते, १००, सागर, सुयोग नगर, नागपुर-४४० ०१५.

'धम्म पोक्खर' विपश्यना केंद्र के नाम में परिवर्तन

अजमेर जिले के पुष्कर में "धम्म पोक्खर" विपश्यना केंद्र का निर्माणकार्य गत वर्ष आरंभ हुआ और इस वर्ष वहां सफलतापूर्वक एक शिविर का संचालन हुआ। भविष्य में जुलाई, सितंबर और नवंबर के शिविरों की तारीखें भावी कार्यक्रमों की सूची में प्रकाशित हो गयी हैं। केंद्र में अब तक १२० साधकों के लिए धम्मकक्ष तथा अन्य सामान्य सुविधाओं का निर्माण हो चुका है। अभी वहां पर २५-२५ पुरुष-महिलाओं के निवास, भोजनालय तथा समुचित रसोईघर आदि का निर्माण करना शेष है। इसके अतिरिक्त पेड़-पौधे लगाने के साथ केंद्र का सौंदर्यीकरण भी करना है। केंद्र को आयकर की सुविधा प्राप्त है।

पूज्य गुरुदेव ने इसका नाम बदल कर **"धम्म पुष्कर"** रखा है ताकि नेपाल के विपश्यना केंद्र "धम्म पोखरा" नाम की समानता के कारण कोई गलतफहमी न रहे।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क:

श्री रवि तोषणीवाल, तोषणीवाल इंस्ट्रूमेंट्स मैन्युफैक्चरिंग प्रा. लि., पो. गगवाना, जिला- अजमेर- ३०५०२३.

म्यंमा (बर्मा) में विपश्यना शिविरों की बढ़ती लोकप्रियता

'इनजिन बिन' में विपश्यना का पहला शिविर

म्यंमा के मध्यवर्ती क्षेत्र में स्थित भदंत वैबू सयाडो के स्थान **"इनजिन बिन"** में विपश्यना का पहला अकेंद्रीय शिविर विगत २६-३ से ६-४ तक लगा। इसका संचालन अंग्रेजी और बर्मी भाषा में किया गया।

शिविर में कुल ३३ पुरुष और ६८ महिलाओं (१०१) ने भाग लिया और बहुत लाभान्वित हुए। इससे प्रभावित होकर शिविर आयोजकों ने यहां हर साल एक शिविर लगवाने का निश्चय किया है।

'नाम खाम' में विपश्यना का पहला शिविर

म्यंमा-चीन सीमा के समीप उत्तरी म्यंमा के **नाम खाम** नामक स्थान के **'जेया सुखा विहार'** में विपश्यना का पहला अकेंद्रीय शिविर २४-५ से ४-६, २००८ तक लगा। यहां की स्थानीय भाषा 'शान' है। पूज्य गुरुजी के प्रवचनों और निर्देशों का शान भाषा में अनुवाद किया गया और इसके माध्यम से शिविर का संचालन हुआ। इसमें कुल ३० पुरुष (३ पुराने) और ७३ महिलाओं (४ पुरानी) ने भाग लिया। सब को प्रभूत लाभ मिला। यहां के ट्रस्टियों ने मिल कर हर वर्ष कम-से-कम तीन शिविर लगवाने का निश्चय किया।

अब यहां के साधक नियमित रूप से सामूहिक साधनाओं में भाग लेते हैं। 'नाम खाम' में प्रातः ६ से ७ बजे तक सामूहिक साधना निश्चित की गयी है।

शिविर समापन पर आयोजकों ने प्रवचनों तथा प्रातःकालीन वंदनाओं की सीडीज उपलब्ध करायीं, जिसे साधकों ने बहुत पसंद किया। विशेषकर वंदना की सीडी लगा कर लोग जब अपने घर में

Postal Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08

Postal Licence No. LII/RNP-WPP-03

ध्यान करते हैं तब बहुत शांति महसूस करते हैं और साधना अच्छी होती है। अनेकों ने बताया कि वर्षों से वे इसी की खोज में थे, जो अब प्राप्त हुई। 'नाम खाम' के लोग शीघ्र ही अपने यहां विपश्यना केंद्र स्थापित करने के लिए कटिबद्ध हो गये हैं।

म्यंमा-चीन सीमा पर बसे **'मुसे'** गांव के अनेक साधकों ने इस शिविर में भाग लिया। वे भी अपने क्षेत्र में अकेंद्रीय शिविर आयोजित करवाना चाहते हैं।

घर-घर में पालि

पालि प्रशिक्षण के लिए धम्मगिरि पर योग्य व्यक्तियों के लिए विधिवत कक्षाएं चलती हैं और मुंबई विश्वविद्यालय के माध्यम से परीक्षाओं का भी आयोजन होता है। परंतु पालि तिपिटक को समझने और बुद्धवाणी का लाभ उठाने के लिए किसी उपाधि की आवश्यकता नहीं होती। अतः पालि के सामान्य ज्ञान के लिए **"घर-घर में पालि"** अभियान चलाते हुए, पालि प्रशिक्षकों के माध्यम से स्थान-स्थान पर **७-दिवसीय पालि प्रशिक्षण कार्यशालाओं** का आयोजन किया जा रहा है। इच्छुक साधक-साधिकाएं निम्न स्थानों पर आयोजित इन कार्यशालाओं का लाभ ले सकते हैं।

तिथि व स्थानः दि. ७ से १५ अगस्त, २००८. कोठारी फार्म हाऊस, अजमेर रोड से २किमी. अंदर, जयसिंहपुरा रोड, भानक्रोटा, जयपुर.

संपर्कः श्री महेश शर्मा, फोन – ०१४१-२६८०२२०,
०-९८२८१६०८२९.

तथा मेहसाणा (गुजरात) में निम्न पते परः

पालि प्रशिक्षण कार्यशालाः १-११ से ९-११, २००८ (११ बजे तक)

संपर्कः श्री उपेंद्र पटेल, १८, श्रद्धा काम्प्लेक्स, दूसरी मंजिल, म्युनिसिपल कार्यालय के सामने, मेहसाना-३८४००१, फोनः (०२७६२) २५४६३४, २५३३१५. मोबा. ०९३७६३-५३३१५
Email: upendrakpatel@rediffmail.com

दोहे धर्म के

बुद्ध रत्न सीमारहित, धर्मरत्न अनसीम।
संघरत्न सीमारहित, प्राणी सभी ससीम॥

तीन रत्न की शरण में, धरम शरण ही जान।
तीन रत्न की वंदना, धरम वंदना जान॥

बुद्ध धरम का संघ का, यह सच्चा सम्मान।
जीवन जीऊं धरम का, पाऊं पद निर्वाण॥

तीन रत्न की शरण में, आत्म-शरण पहचान।
आत्म-शरण ही धर्म है, धर्म-शरण सुख खान॥

शरण सही है आत्म की, अन्य शरण ना कोय।
आत्म-शरण सद्धर्म-शरण, सत्य वचन सुख होय॥

पूजन अर्चन, वंदना, तो ही सार्थक होय।
जीवन में जागे धरम, पाप विसर्जित होय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोनः 2493 8893, फैक्सः 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

करुणा करी ज बुद्धजी, मारग दियो बताय।
पार उतरस्यां आप ही, चाल्या अपणै पांय॥

पंथ बतायो बुद्धजी, चलणो अपणो काम।
चलतां चलतां आप ही, मिटसी दुक्ख तमाम॥

चलतां चलतां आप ही, पंथ सांकड़ो होय।
पड़्यां परायै आसरै, पार न पूगै कोय॥

म्हे ही म्हारै करम स्यूं, होवां सुद्ध असुद्ध।
और कूण सोधै भला, देव, ब्रह्म या बुद्ध॥

सरण सांचली स्वयं री, नहीं परायी कोय।
एक सरण है धरम री, बाकी बिरथा होय॥

स्वावलंब रो जीवणो, सुरग सुखां री खाण।
परावलंब रो जीवणो, निस्चै नरक समान॥

देबेनरा मूंदड़ा परिवार
गोश्वारा रोड, पंडित मेघराज मार्ग,
विराट नगर, नेपाल.
फोनः ०९९-२१-५२७६७१
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष** 2552, **आषाढ़ पूर्णिमा,** १८ **जुलाई,** 2008

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. 500/-, US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं.** 19156/71. Regn. No. LII/REN/RNP-46/2006-08

Licenced to post without Prepayment of postage -- Licence number-- LII/RNP-WPP-03
Posting day- Purnima of Every Month, Posted at Igatpuri-422403, Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086
फैक्स : (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org